Vol. 2, No. 4 (October 2013) P. 15-19 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

# साम्प्रदायिक सद्भाव एवं सामाजिक विकास में संगीत की भूमिका

*रुपाली गोखले*[1], संतोष पुरंदरे[1], दीपक कुमार मित्तल[2]*

*[1] जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर*

*[2]राजा मानसिंह तोमर संगीत एंड आर्ट्स विश्वविद्यालय, ग्वालियर*

** रुपाली गोखले, शोधार्थी, [1] जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर*

Email: sargam80@gmail.com

हमारा देश भारत विश्व का सबसे बडा लोकतांत्रिक देश है। यह अपनी गौरवशाली परंपरा और सार्वभौम मानदण्डो के कारण विशाल माना जाता है न कि अपने विशाल भू–भाग या विराट जनसंख्या के कारण। उदारता, सहिष्णुता, चिंतन और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता इन गुणों के कारण ही परिलक्षित होती है। वेशभूषा, भाषा, आचार विचार व धर्म की विविधता को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोकर चलना सहज नहीं है, लेकिन भारत ने इसे युगों से अपनाया है और व्यवहार में उतारा है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा जगन्नाथपुरी से द्वारकापुरी तक यह विशाल भारत भावना के ऐसे सूक्ष्म धागों से बंधा है कि कहीं एकतार छेडने से सारा राष्ट्र स्पंदित हो उठता है। करोड़ों दिल एक साथ धड़कने लगते हैं। इस एकता को खंडित करने के लिए कुछ विस्फोटक शब्दों का निर्माण हमारी राजव्यवस्था के द्वारा किया जाता रहा है ऐसा ही एक शब्द साम्प्रदायिक है, जिसकी गूंज आज चारों अर सुनायी दे रही है। प्रायः धर्म और सम्प्रदाय को समझने में हम भूल कर बैठे हैं क्योंकि धर्म धारण करने की वस्तु है और सम्प्रदाय अनुकरण की। भारतीय धर्म सिद्वांत में जिस धर्म की बात की गयी है वह वास्तव में मानव धर्म है न कि साम्प्रदायिक मत। इसलिए भारत के सभी धर्मो में एक ब्रम्ह और उससे उत्पन्न अनेकों जीवों की अवधारणा प्राप्त होती है, जो वास्तव में प्रकारान्तर से साम्प्रदायिक सद्भाव का प्रत्यक्षीकरण है।

व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक वैभवशालीता के लिए भारतीय परंपराओं में कलाओं को विशेष प्रश्रय दिया गया है जो व्यक्ति के बाह्य एवं आंतरिक विकास का आधार है। संगीत कला उनमें से एक है । इस कला के माध्यम से व्यक्ति का मानसिक परिशोधन होता है क्योंकि रागिनी का सीधा सम्बन्ध मन और आत्मा से जुडता है। संगीत के माध्यम से ही समाज में फैली हुयी सांम्प्रदायिकता को दूर करने के लिए अमीर खुसरो, कबीर, रहीम, रसखान, तानसेन जैसे– संगीतकारो एवं काव्यकारों ने अथक प्रयास किये इसके साथ–साथ संगीत के माध्यम से समाज को विकास के पथ पर ले जाने का कार्य भी किया।

वस्तुतः समस्त ब्रहम्माण्ड ही संगीतमय है, नाट्यमय है। शब्द ध्वनि है, ध्वनि नाद है और नाद ब्रहम् है। यही ब्रहम सृष्टि के सभी प्राणियों में स्पंदित होता है। इस भाव की स्थापना ही साम्प्रदायिक सद्भाव एवं सामाजिक विकास का मूल है। साम्प्रदायिक सद्भाव के क्षेत्र में संगीत की भूमिका को अलाउद्दीन खिलजी के समय के दो प्रसिद्व संगीतकारों –गोपाल नायक और अमीर खुसरो के माध्यम से भली भांति समझा जा सकता है। हिन्दू और मुस्लिम संगीतकारों ने संगीत जगत को ''चतुर्दण्डी'' सम्प्रदाय जैसी स्थापना दी। गोपाल नायक जैसे हिन्दू गायक के स्वर ने अलाउद्दीन जैसे पाषाण को पिघला दिया यानि संगीत की गर्मी में सम्प्रदायों की बर्फ पिघल गई जिसे बैजू जैसे संगीतकार ने भी सराहा है –

*विद्या सोई, भली जौन साधी है रे लाल ।*
*रंगमहल महँ दोउ जुरि बैठे*
*रीझि मृगन दइ माल ।*
*''सात गुपित, सात प्रगट,''*
*चारों डॉडी बॉधि आए नायक गोपाल ।*
*''बैजू कहे, गाएतें भूलि गए सप्त सुर*
*पिधिलौ पारन बूडे ताल ।।*

इसी प्रकार अमीर खुसरो, शेख निजामुद्दीन चिश्ती, सैयद मुहम्मद, इमाम, सैयद मुहम्मद मूसा, कवि हसन अली सजरी को एक किसान द्वारा गायी गयी इन पंक्तियों में आत्मविभोर कर दिया–''बारिहि लाइयों, राम मनाइयो।''

इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि संगीत, संगीत होता है वह न हिन्दु होता है और न मुसलमान। निजामुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर आज भी अनेक हिन्दी गीत गाये जाते हैं जिनकी रचना अमीर खुसरो जैसे मुस्लिम कवि द्वारा की गयी थी। खुसरो ने ब्रज में प्रचलित कृष्ण भक्ति काव्य के आधार पर निजाम के लिए वैसे ही प्रेम भक्तिपूर्ण पदों की रचना की –

*''ए मॉ रंग है, मोहे अपने ही रंगले निजाम पिया''।*

इसी प्रकार अमीर खुसरो ने ब्रज के कृष्ण काव्य में प्रचलित पनघट लीला का भी अपने पदों में प्रकारान्तरित रूप में उल्लेख किया है –

*''बहुत कठिन है डगर इस पनघट की कैसे भर लाउं मद्यवा से मटकी*
*पनिया भरन को मैं जो गई थी । दौड झपट मोरी मटकी फटकी*
*खुसरो निजाम के बल–बल जइये लाज रखों मेरे घूंघट पटकी''।*

अमीर खुसरों द्वारा अपनी कव्वालियों और गीतों में जिस निजाम शब्द का प्रयोग किया है वह ब्रज कवियों के ''कृष्ण, नागर, किशोर जैसे–संज्ञा पदों का परिवर्तित रूप है, जो अमीर खुसरों के समय में संगीत द्वारा स्थापित सांम्प्रदायिक सद्भाव का सशक्त उदाहरण है । अमीर खुसरो के ही माध्यम से ''बंसत पंचमी'' का महोत्सव चिश्ती परंपरा में भी पहुंचा ।

संगीत के सांम्प्रदायिक सद्भाव के स्थापना क्षेत्र में किये गये इन प्रयासों के अन्तर्गत हम तात्कालीन समाज के विकास को भी देख सकते हैं। अमीर खुसरों के गीतों में स्त्री भाव से जो बात कहीं गयी वह उस समाज की नारी की स्वतंत्रता को व्यक्त करती है। अमीर खुसरों का समाज नारी को अपने प्रेम भाव को खुले रूप में व्यक्त करने की स्वतंत्रता देता था इसलिए वह स्त्री की इस भावना को अपने गीतों में व्यक्त कर पाये –

*''छाप तिलक सब छीनी रे मो से नैना मिलाइके*
*प्रेम थटी का मद्यवा पिलाके मतवारी करलीनी रे*
*गोरी–गोरी बयिया हरी हरी चूरियां बयिंयां पकड धरलीनी रे मोसे नैना मिलाएके*
*बल–बल जाउं मैं तोरे रंग रेजवा अपनी सी करलीनी रे मोसे नैना मिलाइके।*
*खुसरो निजाम के बल–बल जयिये मोहे सुहागन कीनी रे मोसे नैनामिलाएके''*

इन्हीं संदर्भो में उन अंशों को भी जोड़ा जा सकता है जिनमें अमीर खुसरो ने उनके समाज में प्रचलित परंपराओं का चित्रण किया है एक उदाहरण प्रस्तुत है –

*''काहे को ब्याये बिदेस अरे, लखिया बाबुल मोरे*
*भैया को दियो बाबुल महले दो–महले हमको दिया परदेस*
*अरे, लखिया बाबुल मोरे ।''*

भारतीय समाज में विवाह के बाद पहले सावन पर बेटी को मायके बुलाने की परंपरा प्रचलित है जिसमें पिता, भाई अथवा अन्य कोई संबंधी बेटी को ससुराल से मायके लाता है । खुसरो ने इस परंपरा को भी शब्दबद्ध किया है –

*''अम्मा मेरे बाबा को भेजोरी कि सावन आया।*
*बेटी तेरा बाबा तो बूढा री । कि सावन आया ।।*

किसी भी समाज में धर्म के बिना व्यवस्थाओं की अपेक्षा नहीं की जा सकती। इसलिए हमारे ऋषि पूर्वजों ने समाज को व्यवस्थित बनाने के लिए ''धर्म'' को प्राथमिकता दी है। समय के साथ यही धर्म ''संप्रदाय'' कहलाया। संगीत के माध्यम से लगभग पर्यायवाची इन दोनों शब्दों की उपलब्धि सहज ही हो जाती है। संगीत समाज में व्याप्त छोटे–बडे, उॅचे नीचे, निर्धन धनवान जैसे सामाजिक पदों को समाप्त कर समन्वय स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमि का निभाता है। मध्यकाल में अकबर के नवरत्नों में से एक तानसेन ने संगीत के माध्यम से अकबर की समन्वयवादी नीतियों को प्रसारित किया । अकबर द्वारा स्थापित दीन ए इलाही धर्म में समन्वयवादी राजा को अल्लाह का दर्जा दिया गया है, जिसे तानसेन ने अपने एक पद में इस प्रकार व्यक्त किया है –

*चटक चित्र मित्र हू मिलत अमल,*
*चित्त चढ़त रूप रंग भरत, जगत मन हरत ।*
*तानसेन कहत अकबर अल्ला सुमरि कै नाम गाए*
*एक दरसन ही सुरत निरत ।।*

इन्हीं तानसेन ने हिन्दू और मुस्लिम धर्म के प्रतीकों को सम्मिलित करके साम्प्रदायिक समन्वय का या सद्भाव का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है –

*सर्वमनि अल्ला बडेनमनि, खुदाई जोतमनि नूर*
*थिरतामनि आकास कारनमनि करता भोगनमनि भुक्ति –सृष्टिकरन ।*
*बेदनमनि सामवेद मारन–उच्चाटन–मनि अथर्वन नादमुनि–अनहद*
*पंचम वेद कलामनि कलमा पुरानमनि भागवत*
*भाषामनि अरबी बननमनि वृंदावन ।।*
*आसनमनि अरस कुरस नरनमनि नारायण वृद्धमनि कलपवृक्ष*
*रसिकमानि रसबिहारी भूषनमनि कौस्तुभमनि ।*
*सुखमनि संतोष नामन मुनि हरिनाम जातमनि ब्राम्हण*
*धर्ममनि इमान ताननमनि तानसेन ।*
*अखिलमनि भगवान ।।*

तानसेन ने जोकि हिन्दू थे अकबर जैसे सम्राट को आध्यात्मिकता का पाठ भी पढ़ाया जिसमें धैर्य को धारणकर सारे सुख प्राप्त करने की भारतीय परंपरा को सुंदर ढंग से अभिव्यक्त किया है –

*धीरैं–धीरैं–धीरैं मन, धीरैं ही सब कछु होय । (रामिनी तौडी,चौताल)*
*धीरैं राज, धीरैं काज, धीरैं योग, धीरैं ध्यान, धीरैं सुख–समाजजोय ।।*
*धीरैं तीरथ, धीरैं ब्रत–संयम, धीरैं ही करैं सत्संग,*
*साधुन में बैठ मन को धीरैं राखौय ।*
*''तानसेन'' कहैं सुनो साह अकबर*
*ऐसी बड़ी बादसाही धीरैं ही तैं पाई सोय ।।*

तानसेन ने भारतीय संस्कृति में मनाये जाने वाले त्यौहारों पर पद रचना कर साम्प्रदायिक सद्भाव का परिचय दिया है जैसे–दशहरे के लिए रागिनी मुल्तानी धनश्री में, *आनंद भयो दसहरा सुफल भयोतिथि बार''* जैसा पद एवं ईद पर *''ईद मुबारक होवै ––––––महामश्दान''* जैसा पद (रागिनी तोडी में) लिखकर श्रेष्ठ संगीतकार होने का उदाहरण प्रस्तुत किया है । इस क्रम में तानसेन के पुत्र ''तानतरंग'' का भी उल्लेख किया जा सकता है जिन्होंने भगवान शंकर, शक्ति, राधा और कृष्ण के पदों की रचना कर सांम्प्रदायिक सद्भाव की स्थापना में मदद की साथ ही तत्कालीन समाज को धर्म के आधार पर विकास की एक नई राह पर अग्रसर किया। तानसेन के समय में ही रहीम खानखाना नामक एक श्रेष्ठ कवि हुए जिन्होंने दोहे जैसे छंद के द्वारा साम्प्रदायिक समन्वय की स्थापना के साथ–साथ समाज को व्यवहारिक ज्ञान देने का कार्य भी किया। रहीम मुस्लिम धर्म के अनुयायी होने पर भी भगवान कृष्ण और राम के चरित्र को भली भांति जानते थे। इन्हीं के माध्यम से रहीम ने अपने दोनों उद्देश्यों को सार्थक किया । जैसे –

*1– जे गरीब पर हित करे है रहीम बड लोग*
*कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ।।*
*2– बडे काम ओछो करैं, तो ना बडाई होय ।*
*ज्यों रहीम हनुमत को गिरिधर कहै न कोय ।।*

रहीम के इन दोहों को संगीतबद्ध कर समाज में प्रसारित किया गया और समाज को भेदभाव तथा उॅच–नीच की भावना से उबारने का प्रयास भी हुआ। इस प्रकार मध्यकाल में राजनीति के संरक्षण में रहते हुए भी तानसेन एवं रहीम जैसे संगीत मर्मज्ञों ने समाज को नई चेतना से भरा। इनकी इस पंक्ति में कबीर, तुलसी–जैसे समाज सुधारकों को भी रखा जा सकता है जिनके पदों को आधुनिक काल के गायक स्वर बद्व कर इनके कार्यो को आगे बढाने सुकर्म कर रहे हैं। तुलसीदास द्वारा ''रामचरित मानस'' में लिखी गयी ''गणपति वंदना'', ''शिववंदना'', ''सरस्वती वंदना'' को मुस्लिम गायक बंधु ''अहमद हुसैन एवं मौहम्मद हुसैन'' स्वरबद्ध कर तुलसी की साम्प्रदायिक सद्भावना को वर्तमान समय में स्थापित रखने का कार्य किया है । उदाहरण के लिए –

*''गाइये गणपति जगवंदन ।*
*शंकर सुमन भवानी के नंदन ।।*
*मोदक प्रिय मुख मंगल दाता,*
*विद्या–वारिधि बुद्वि विधाता ।।*

कबीर ने तो हिन्दु और मुसलमानों की धार्मिक आडंबरों को लेकर किये जाने वाली संघर्ष की भरपूर आलोचना की है। वे प्रेम को इस संसार का सबसे महत्वपूर्ण घटक मानते हैं जिससे मुसलमानों को ''खुदा'', हिन्दुओं को ''ईश्वर'' ''सिखों'' को सद्गुरू की प्राप्ति सहज ही हो जाती है –

*प्रेम–प्रेम सब कोई कहे, प्रेम न चिन्है कोय ।*
*जा मारक साहिब मिलै, प्रेम कहावै सोय ।।*

ऐसे ही समन्वयवादी दोहों को आधुनिक काल में कुमार गंधर्व, परवीन सुल्ताना, सुरेश वाडकर, भीमसेन जोशी ने स्वरबद्ध किया है। उदाहरण के लिए सुरेश वाडकर द्वारा गाया एक दोहा प्रस्तुत है –

*रहिमन धागा प्रेम का मत तोडो चटकाय,*
*टूटे तो जुडे नहीं, जुडे तो गांठ पड जाय ।।*

अन्ततः सारांश रूप में कहा जा सकता है कि जब मानव मानसिक तथा शारीरिक रूप से व्यथित होता है उसके मन में उद्विग्नता होती है तब संगीत उसे शांत करने का कार्य करता है। मानसिक एवं शारीरिक रूप से शांति की अवस्था में ही व्यक्ति अपने और समुदाय के विकास के संबंध में सही–सही विचार कर पाता है। शांति की अवस्था में ही वह साम्प्रदायिक सद्भाव जैसे महत्वपूर्ण विषय को समझने की शक्ति से भरता है। इस प्रकार मानव जीवन में संगीत का महत्व अक्षुण्य है जिसे अमीर खुसरो, तानसेन, तानतरंग जैसे कवि एवं गायकों ने न केवल समझा बल्कि उसे सही–सही रूप में समाज में प्रसारित भी किया। इसी प्रकार कबीर, रहीम और तुलसी के काव्य में समाहित एकता के और सामाजिक विकास के सूत्रों को देखा जा सकता है जिन्हें तत्कालिक युग के लिए उपयोगी मानते हुए आधुनिक युग के विभिन्न गायकों ने साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापना और सामाजिक विकास की दृष्टि से स्वरबद्ध किया ।

.....